

## डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों की युवा समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन एक बहुआयामी मात्रात्मक अनुसंधान

*A Comparative Study of Youth Problems Among Undergraduate and Postgraduate Students at DHSGSU: A Multi-Dimensional Quantitative Investigation*

1\* Sharad Masih, 2\* Dr. Sandhaya Upadhayay

1\* पीएचडी शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

2\* प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

### सारांश

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत युवा बहुआयामी चुनौतियों — शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य एवं व्यावसायिक — का सामना करते हैं। भारत, जिसकी कुल जनसंख्या का 27.5% भाग 15-29 आयु वर्ग का है, के क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों में यह चुनौती विशेष रूप से तीव्र है। प्रस्तुत अध्ययन डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय (DHSGSU), सागर — मध्यप्रदेश का सबसे पुराना केंद्रीय विश्वविद्यालय, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है — के 300 विद्यार्थियों (स्नातक n=150; परास्नातक n=150) पर आधारित तुलनात्मक मात्रात्मक अनुसंधान प्रस्तुत करता है। शोधकर्ता-निर्मित युवा समस्या सूची (Youth Problem Inventory, YPI), जिसमें छः आयामों पर 80 कथन हैं, का निर्माण उत्कृष्ट मनोमितीय गुणों के साथ किया गया (Cronbach  $\alpha = 0.89$ ; Content Validity Ratio  $> 0.62$ )। SPSS v.25 के माध्यम से  $\alpha = 0.05$  पर स्वतंत्र t-परीक्षण, Pearson सहसंबंध, एकमार्गी ANOVA एवं बहुस्तरीय प्रतिगमन (Multiple Regression) का प्रयोग किया गया। परिणामों में 5-बिंदु मापनी पर समग्र YPI माध्य 3.49 (SD = 0.49) — मध्यम-से-उच्च तीव्रता — पाया गया। परास्नातक विद्यार्थियों ने स्नातकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च समस्या-तीव्रता दर्ज की ( $t(298) = 2.78, p = 0.006, d = 0.32$ ), जिसमें सबसे बड़ा अंतर व्यावसायिक चिंता (Vocational) में था (PG = 3.84 बनाम UG = 3.46)। महिला विद्यार्थियों में एक "मौन संकट" (Silent Crisis) उभरा — मनोवैज्ञानिक ( $d = 0.66$ ) एवं सामाजिक ( $d = 0.89$ ) समस्याओं में पर्याप्त वृद्धि के साथ। ग्रामीण विद्यार्थियों में आर्थिक तनाव विशेष रूप से तीव्र था ( $d = 0.81$ )। पारिवारिक आय का YPI के साथ ऋणात्मक सहसंबंध सिद्ध हुआ ( $r = -0.38, p < 0.001$ ), जिसमें आर्थिक आयाम पर सर्वाधिक प्रभाव ( $r = -0.54$ ) रहा। बहुस्तरीय प्रतिगमन ने आय ( $\beta = -0.27$ ) को YPI स्कोर का सबसे प्रबल भविष्यवक्ता पहचाना। "त्रिगुण भेद्यता" (Triple Vulnerability) — परास्नातक, महिला, एवं ग्रामीण होने का संयुक्त प्रभाव — ने सर्वोच्च YPI माध्य (3.71) उत्पन्न किया। अध्ययन एक मानकीकृत हिन्दी-माध्यम YPI उपकरण, संस्थागत नीति हेतु अनुभवजन्य आधार, एवं विद्यार्थी कल्याण हस्तक्षेप हेतु पाँच-वर्षीय रोडमैप प्रदान करता है। निष्कर्ष क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के क्रियान्वयन हेतु प्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक हैं।

**मुख्य शब्द:** युवा समस्याएँ; मानसिक स्वास्थ्य; लिंग-भेद; ग्रामीण-नगरीय विभाजन; उच्च शिक्षा; भारत; केंद्रीय विश्वविद्यालय; YPI; बुंदेलखंड; NEP 2020.

### I. प्रस्तावना

युवा — जिन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) 15-24 वर्ष आयु वर्ग में परिभाषित करता है तथा भारत सरकार की राष्ट्रीय युवा नीति (2014) 15-29 वर्ष आयु वर्ग में — एक रणनीतिक राष्ट्रीय महत्त्व के जनसांख्यिकीय वर्ग हैं [1], [2]। भारत वर्तमान में विश्व की सबसे युवा प्रमुख अर्थव्यवस्था है, जिसकी कुल जनसंख्या का लगभग 65% भाग 35 वर्ष से कम आयु का है तथा माधिका आयु 28.4 वर्ष है — जो चीन (38.4), जर्मनी (45.7) एवं जापान (48.6) से काफी कम है [3]। अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE) 2021-22 के अनुसार उच्च शिक्षा नामांकन 4.33 करोड़ तक पहुँच गया है तथा सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrolment Ratio, GER) 2014-15 के 23.7% से बढ़कर 2021-22 में 28.4% हो गया है [4]। यद्यपि ये आँकड़े उत्साहजनक हैं, ये युवा-कष्ट के चिंताजनक संकेतकों के साथ सहअस्तित्व में हैं।

NIMHANS द्वारा संचालित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NMHS) 2015-16 के अनुसार 18-29 आयु वर्ग के 7.5% भारतीय युवा एक या अधिक मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं [5]। Cherian एवं सहयोगियों [6] के बहु-राज्य अध्ययन (n = 1,628)

में 69.9% भारतीय विश्वविद्यालय विद्यार्थियों में मध्यम-से-उच्च चिंता, 59.9% में अवसाद, एवं 12.1% में आत्महत्या के विचार पाए गए। Sapien Labs Mental State of India Report 2023 [7] भारत को युवा-कल्याण संकेतकों पर वैश्विक स्तर पर सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले देशों में रखती है, जहाँ 18-24 आयु वर्ग के 51% युवा "व्यथित" (Distressed) या "संघर्षरत" (Struggling) श्रेणी में हैं। इस पृष्ठभूमि में क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों — विशेषकर सामाजिक-आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में स्थित — द्वारा अनुभूत युवा समस्याएँ एक अल्प-शोधित किंतु महत्वपूर्ण विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं।

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय (DHSGSU), सागर — 1946 में स्थापित एवं 2009 में केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त — मध्यप्रदेश का सबसे पुराना एवं एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है। राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढाँचा (NIRF) 2024 के अनुसार [8], मुख्य परिसर 36 शिक्षण विभागों एवं 11 स्कूलों में लगभग 1,700 स्नातक (UG) एवं 1,060 परास्नातक (PG) विद्यार्थियों को नामांकित करता है। विश्वविद्यालय बुंदेलखंड क्षेत्र — जो ग्रामीण-नगरीय विषमताओं, सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन एवं सीमित रोज़गार-अवसरों से चिह्नित है — की सेवा करता है। पारिवारिक उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) 2022-23 के अनुमानों के अनुसार DHSGSU के लगभग 48% विद्यार्थी ₹25,000 से कम मासिक आय वाले परिवारों से आते हैं [9]।

एक महत्वपूर्ण संस्थागत संकेतक प्लेसमेंट प्रदर्शन है: NIRF 2024 के अनुसार 2023-24 में केवल 37 UG एवं 39 PG विद्यार्थियों को कैम्पस प्लेसमेंट प्राप्त हुआ — कुल 2,760 नियमित विद्यार्थी समूह में लगभग 2.8% प्लेसमेंट दर। UG माध्यिका वार्षिक प्लेसमेंट वेतन ₹1.80 लाख रहा, जबकि PG विद्यार्थियों ने ₹18.00 लाख प्राप्त किया। शैक्षणिक आकांक्षा एवं सीमित रोज़गार परिणामों के बीच यह तीव्र विचलन ही प्रस्तुत अनुसंधान का अनुभवजन्य संदर्भ रचता है।

चुनौती हाल की वृहत् आर्थिक स्थितियों से और बढ़ी है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की [22] India Employment Report 2024 दर्ज करती है कि भारत के लगभग 83% बेरोज़गार युवा हैं, तथा शिक्षित युवा बेरोज़गारी 2000 के 35.2% से बढ़कर 2022 में 65.7% हो गई है। यह बेरोज़गारी-आकांक्षा विचलन कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के स्नातकों पर विशेष रूप से तीव्र रूप से कार्य करता है — वे क्षेत्र जो DHSGSU में अधिकता से प्रतिनिधित्व किए जाते हैं। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) 2023-24 [23] कला स्नातकों में 41% बेरोज़गारी दर एवं मानविकी परास्नातकों में 28% दर्ज करता है, जबकि अभियांत्रिकी स्नातकों में यह 8% है।

यद्यपि कई अध्ययनों ने भारतीय उच्च शिक्षा में युवा समस्याओं की जाँच की है [10]-[14], विद्यमान शोध में निम्नलिखित सीमाएँ हैं: (i) अधिकांश अध्ययन एक एकल आयाम (शैक्षिक तनाव, मानसिक स्वास्थ्य, या करियर चिंता) पर केंद्रित हैं, बहुआयामी एकीकरण की कमी है; (ii) हिन्दी-माध्यम मानकीकृत उपकरण दुर्लभ हैं; (iii) सामाजिक-आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण जनसंख्या की सेवा करने वाले क्षेत्रीय विश्वविद्यालय अल्प-अध्ययित हैं; तथा (iv) बहुत कम अध्ययन संस्थागत संकेतकों (प्लेसमेंट, अवसंरचना) को सांख्यिकीय रूप से मान्य ढाँचों के माध्यम से छात्र-स्तरीय मनोवैज्ञानिक परिणामों से जोड़ते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन इन रिक्तियों को चार शोध-उद्देश्यों के माध्यम से संबोधित करता है: (1) एक बहुआयामी हिन्दी-माध्यम YPI का विकास एवं वैधीकरण; (2) DHSGSU के UG एवं PG विद्यार्थियों के बीच युवा समस्याओं की तुलना; (3) लिंग एवं ग्रामीण-नगरीय निवास के आधार पर अंतर का परीक्षण; तथा (4) पारिवारिक आय एवं युवा समस्याओं के बीच सम्बन्ध की जाँच। संगत शून्य परिकल्पनाएँ ( $H_{01}$  से  $H_{04}$ ) यह परीक्षण करती हैं कि क्या ये समूहन-चर YPI स्कोर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर उत्पन्न करते हैं।

## II. सैद्धांतिक ढाँचा एवं संबंधित कार्य

### A. सैद्धांतिक आधार

चार सैद्धांतिक ढाँचे प्रस्तुत अनुसंधान को आधार प्रदान करते हैं। Erikson [15] का मनोसामाजिक विकास सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि 18-40 वर्ष आयु वर्ग के व्यक्ति "अंतरंगता बनाम अलगाव" (Intimacy versus Isolation) चरण से गुजरते हैं — जो स्वतंत्र पहचान-निर्माण एवं सम्बन्ध-खोज के बीच के तनावों से चिह्नित है। DHSGSU में सामान्य प्रथम-पीढ़ी के विद्यार्थियों (First-Generation Learners) के लिए यह चरण एक साथ सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संक्रमणों द्वारा तीव्र होता है।

Maslow [16] का आवश्यकता-पदानुक्रम (Hierarchy of Needs) ढाँचा भविष्यवाणी करता है कि अपूर्ण शारीरिक एवं सुरक्षा आवश्यकताओं (जैसे आर्थिक असुरक्षा, खाद्य असुरक्षा) का अनुभव करने वाले विद्यार्थी प्रभावी रूप से उच्च-स्तरीय उपलब्धियाँ — शैक्षिक उत्कृष्टता एवं आत्म-साक्षात्कार — नहीं कर सकते। यह पूर्वानुमान सीधे अध्ययन की आय-YPI सम्बन्धों की जाँच को सूचित करता है।

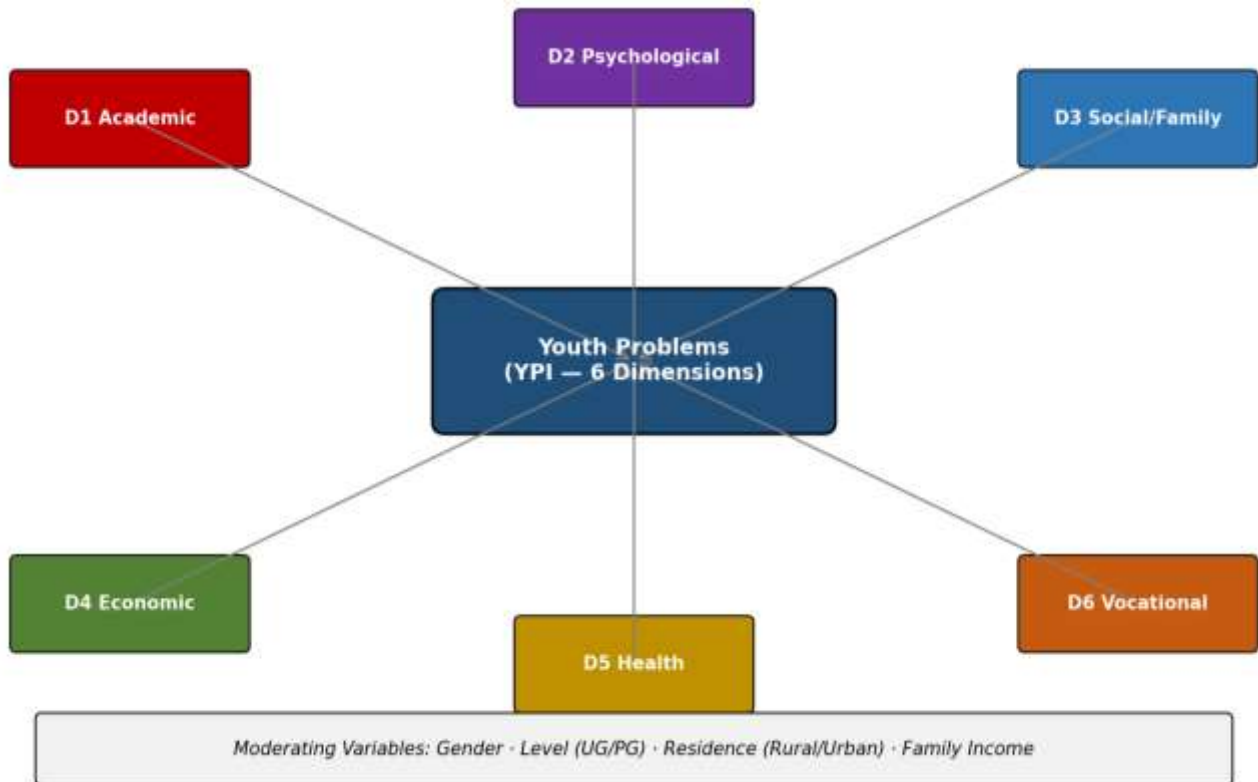
Lazarus एवं Folkman [17] का तनाव का संज्ञानात्मक-लेन-देन मॉडल (Cognitive-Transactional Model) तर्क देता है कि कष्ट वस्तुनिष्ठ तनाव-कारकों से नहीं, अपितु व्यक्तियों द्वारा उन तनाव-कारकों के संज्ञानात्मक मूल्यांकन (Cognitive Appraisal) से उत्पन्न होता है, जो उनके सामना-संसाधनों के सापेक्ष होता है। एक केंद्रीय विश्वविद्यालय में संक्रमण कर रहे ग्रामीण विद्यार्थी आर्थिक एवं सामाजिक तनाव-कारकों का मूल्यांकन अपनी सामना-क्षमता से अधिक के रूप में कर सकते हैं, जिससे

वस्तुनिष्ठ रूप से समान परिस्थितियों के बावजूद उन्नत कष्ट उत्पन्न होता है। Bandura [18] का आत्म-प्रभावकारिता (Self-Efficacy) सिद्धांत करियर-सम्बन्धी चिंता को समझने का ढाँचा प्रदान करता है: जब प्रतिनिधिक अनुभव (वरिष्ठों के रोज़गार-परिणामों का अवलोकन) अत्यधिक नकारात्मक होता है, विद्यार्थी निम्न करियर-आत्म-प्रभावकारिता विकसित करते हैं — जो उन्नत व्यावसायिक आयाम स्कोर के रूप में प्रकट होती है।

### B. अनुभवजन्य अध्ययन

भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अनुभवजन्य अध्ययन उच्च शिक्षा में युवा समस्याओं पर अभिसरण साक्ष्य प्रदान करते हैं। शर्मा एवं सिंह [10] ने 12 भारतीय विश्वविद्यालयों में परास्नातक विद्यार्थियों में स्नातकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च शैक्षिक तनाव दर्ज किया ( $t = 2.96, p < 0.01$ )। Bayram एवं Bilgel [19] ने तुर्की के विश्वविद्यालय प्रतिदर्श में परास्नातक विद्यार्थियों में उन्नत अवसाद, चिंता एवं तनाव की पहचान की। Eisenberg आदि [20] ने 2,843 विद्यार्थियों के अमेरिकी प्रतिदर्श का उपयोग करके परास्नातक मानसिक-स्वास्थ्य समस्या-दर (15.6%) को स्नातक (13.2%) से उच्च पाया।

लिंग-सम्बन्धी निष्कर्ष विशेष रूप से सुसंगत हैं। Cherian आदि [6] ने महिला चिंता-प्रसार 76.3% बनाम पुरुषों में 62.4% दर्ज किया। मिश्रा [11] ने उत्तर भारतीय विश्वविद्यालयों की जाँच करते हुए पारिवारिक अपेक्षाओं एवं विवाह-सम्बन्धी दबाव को महिला विद्यार्थियों के लिए प्रमुख सामाजिक तनाव-कारकों के रूप में पहचाना। बुंदेलखंड में ग्रामीण-नगरीय अंतर पर अध्ययन [21] निरंतर ग्रामीण विद्यार्थियों में अधिक सामाजिक एवं आर्थिक कष्ट पाते हैं — यद्यपि नगरीय विद्यार्थी उन्नत जीवनशैली-सम्बन्धी स्वास्थ्य समस्याओं को दर्शाते हैं।



चित्र 1: छः YPI आयामों को नियंत्रक चरों (लिंग, स्तर, निवास, पारिवारिक आय) के साथ एकीकृत करने वाला संकल्पनात्मक ढाँचा।

### III. अनुसंधान विधि

#### A. अनुसंधान अभिकल्प

एक वर्णनात्मक-तुलनात्मक (Descriptive-Comparative) अनुप्रस्थ-काट (Cross-Sectional) मात्रात्मक सर्वेक्षण अभिकल्प नियोजित किया गया। यह अभिकल्प वर्तमान युवा-समस्या तीव्रता का चित्रण एवं समूहन चरों (स्तर, लिंग, निवास, आय) के पार तुलनात्मक विश्लेषण — दोनों को सक्षम बनाता है।

#### B. जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

लक्षित जनसंख्या में 2024-25 शैक्षणिक वर्ष के दौरान DHSGSU के मुख्य परिसर में नामांकित सभी नियमित UG एवं PG विद्यार्थी (N ≈ 2,760) शामिल थे। प्रतिदर्श-आकार Cochran [24] के सूत्र का उपयोग 95% आत्मविश्वास-स्तर एवं 5% त्रुटि-सीमा पर

निर्धारित किया गया, जिसने  $n = 300$  (UG = 150, PG = 150) निकाला। चार स्तरीकरण-चरों — शैक्षिक स्तर, लिंग, निवास, एवं शैक्षिक विभाग — के पार स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श (Stratified Random Sampling) कार्यान्वित किया गया।

### C. उपकरण: युवा समस्या सूची (YPI)

युवा समस्या सूची (Youth Problem Inventory, YPI) चार चरणों में विकसित की गई: (1) 120+ साहित्य-स्रोतों से कथन-निर्माण जिसने 110 उम्मीदवार कथन निकाले; (2) Lawshe [25] के अंतर्वस्तु-वैधता-अनुपात (Content Validity Ratio, CVR) का उपयोग करते हुए 10 विषय-विशेषज्ञों द्वारा अंतर्वस्तु-वैधता आकलन, जिसने  $CVR > 0.62$  को पूरा करने वाले 80 कथनों को बनाए रखा; (3) कथन-विश्लेषण एवं विश्वसनीयता-आकलन हेतु 30 विद्यार्थियों के साथ पायलट परीक्षण; एवं (4) पायलट परिणामों के आधार पर अंतिम परिष्करण। अंतिम YPI में 5-बिंदु लिकर्ट मापनी (1 = "बिल्कुल नहीं" से 5 = "बहुत अधिक") पर छः आयामों के पार 80 कथन शामिल हैं: D1 शैक्षिक (Academic, 20 कथन), D2 मनोवैज्ञानिक (Psychological, 15 कथन), D3 सामाजिक/पारिवारिक (Social/Family, 15 कथन), D4 आर्थिक (Economic, 10 कथन), D5 स्वास्थ्य/जीवनशैली (Health/Lifestyle, 10 कथन), D6 व्यावसायिक/करियर (Vocational/Career, 10 कथन)।

आंतरिक संगति विश्वसनीयता उत्कृष्ट थी — कुल मापनी हेतु Cronbach  $\alpha = 0.89$  एवं उप-मापनियों हेतु 0.76–0.85। संरचना-वैधता (Construct Validity) अन्वेषणात्मक कारक विश्लेषण (Exploratory Factor Analysis; KMO = 0.84, Bartlett परीक्षण  $p < 0.001$ ) द्वारा 0.40 से अधिक के कारक-भागों के साथ समर्थित थी। समवर्ती वैधता (Concurrent Validity) PSS-10 एवं DASS-21 उपकरणों के साथ  $r = 0.60$  से अधिक सहसंबंधों के माध्यम से स्थापित की गई।

तालिका I: YPI विश्वसनीयता गुणांक

मापनी	कथन-संख्या	Cronbach $\alpha$	95% CI
D1 — शैक्षिक (Academic)	20	0.82	[0.79, 0.85]
D2 — मनोवैज्ञानिक (Psychological)	15	0.85	[0.82, 0.88]
D3 — सामाजिक/पारिवारिक (Social/Family)	15	0.81	[0.78, 0.84]
D4 — आर्थिक (Economic)	10	0.78	[0.74, 0.82]
D5 — स्वास्थ्य/जीवनशैली (Health/Lifestyle)	10	0.76	[0.72, 0.80]
D6 — व्यावसायिक/करियर (Vocational/Career)	10	0.80	[0.77, 0.83]
कुल YPI (Total YPI)	80	0.89	[0.87, 0.91]

तालिका II: YPI आयामों की संरचना एवं भार

आयाम	कथन	भार %	मुख्य संकेतक
D1 शैक्षिक	20	25.0%	परीक्षा-भय, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि
D2 मनोवैज्ञानिक	15	18.75%	तनाव, चिंता, अवसाद, आत्म-सम्मान
D3 सामाजिक/पारिवारिक	15	18.75%	पारिवारिक दबाव, सामाजिक समायोजन
D4 आर्थिक	10	12.5%	शुल्क, छात्रवृत्ति, आर्थिक असुरक्षा
D5 स्वास्थ्य/जीवनशैली	10	12.5%	नींद, पोषण, व्यायाम, डिजिटल लत
D6 व्यावसायिक/करियर	10	12.5%	करियर-मार्गदर्शन, रोजगार
कुल YPI	80	100%	लिकर्ट 5-बिंदु मापनी

### D. प्रक्रिया एवं नैतिकता

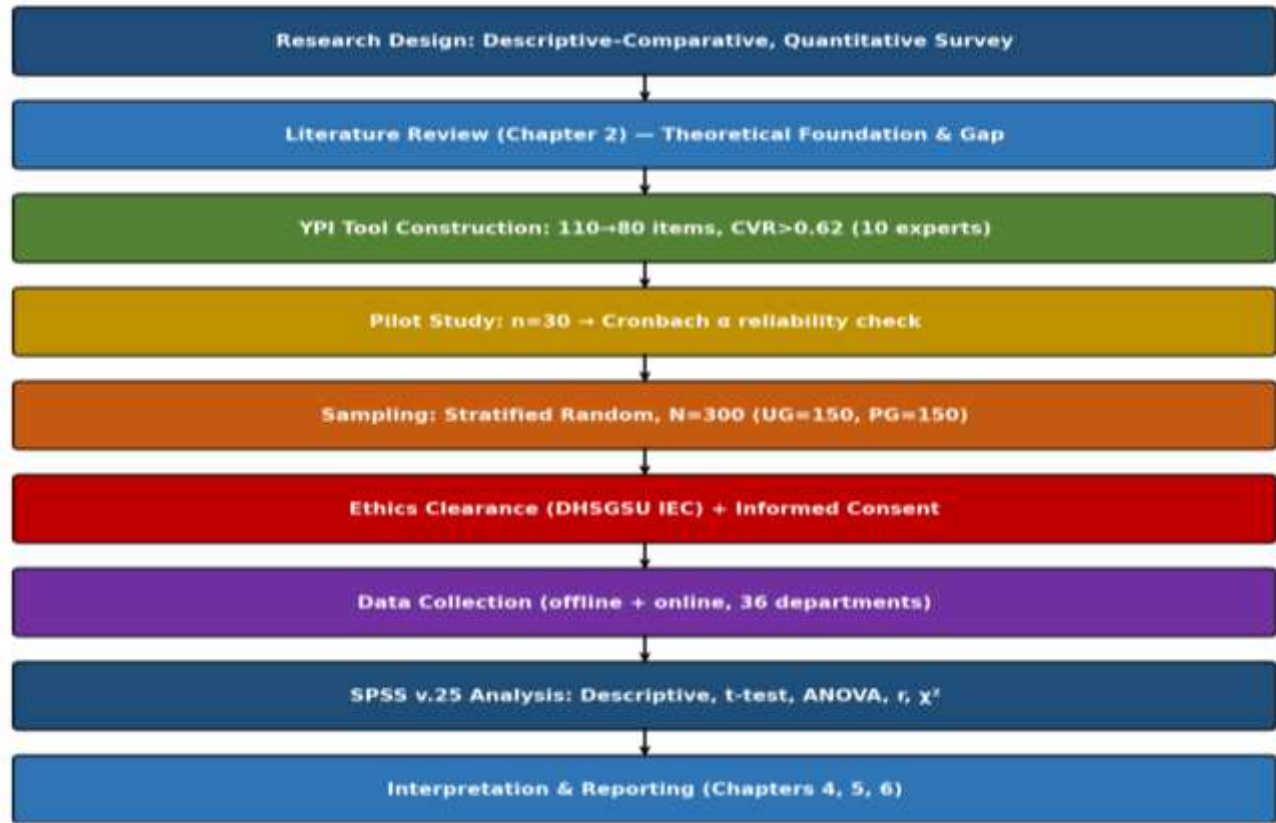
संस्थागत नैतिकता समिति (Institutional Ethics Committee, IEC) के अनुमोदन एवं लिखित सूचित-सहमति के पश्चात्, डेटा आठ सप्ताहों (जनवरी-मार्च 2025) में पेपर-आधारित एवं ऑनलाइन (Google Forms) — दोनों मोड के माध्यम से एकत्रित किया गया। भागीदारी स्वैच्छिक एवं अनामिक थी। मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाइन की जानकारी सभी प्रतिभागियों को प्रदान की गई। प्रतिभागी किसी भी समय बिना परिणाम के वापस ले सकते थे।

### E. सांख्यिकीय विश्लेषण

विश्लेषण SPSS v.25 का उपयोग करते हुए  $\alpha = 0.05$  पर किए गए। वर्णनात्मक सांख्यिकी ने प्रतिदर्श का चरित्रण किया। स्वतंत्र-प्रतिदर्श  $t$ -परीक्षण ने परिकल्पनाओं  $H_{01}$  (UG बनाम PG),  $H_{02}$  (पुरुष बनाम महिला), एवं  $H_{03}$  (ग्रामीण बनाम नगरीय) की जाँच की। Pearson गुणन-क्षण सहसंबंध ने  $H_{04}$  (आय-YPI सम्बन्ध) का परीक्षण किया। Tukey HSD पोस्ट-हॉक के साथ एकमार्गी ANOVA ने विभागीय समूहों की तुलना की। बहुस्तरीय प्रतिगमन (Multiple Regression) ने सभी चार समूहन-चरों के स्वतंत्र योगदान का आकलन किया। प्रभाव-आकार (Cohen's  $d$ ,  $\eta^2$ ,  $r^2$ ) निरंतर गणना किए गए। पैरामीट्रिक परीक्षण से पहले सामान्यता

(Shapiro-Wilk), समरूपता (Levene परीक्षण), एवं बहुसरिखता की अनुपस्थिति ( $VIF < 5$ ) की धारणाओं का सत्यापन किया गया।

विश्लेषणात्मक पर्याप्तता सत्यापित करने के लिए G\*Power 3.1 का उपयोग करते हुए एक post-hoc सांख्यिकीय शक्ति विश्लेषण (Power Analysis) किया गया।  $n = 300$  एवं  $\alpha = 0.05$  (दो-पक्षीय) के साथ, प्रस्तुत अध्ययन ने छोटे-से-मध्यम प्रभाव (Cohen's  $d = 0.32$ ) का पता लगाने हेतु शक्ति  $(1 - \beta) \geq 0.85$  एवं मध्यम-से-वृहत् प्रभाव ( $d \geq 0.50$ ) हेतु शक्ति  $\geq 0.99$  प्राप्त की। ये शक्ति-मूल्य सम्मानित 0.80 सीमा से आराम से अधिक हैं।

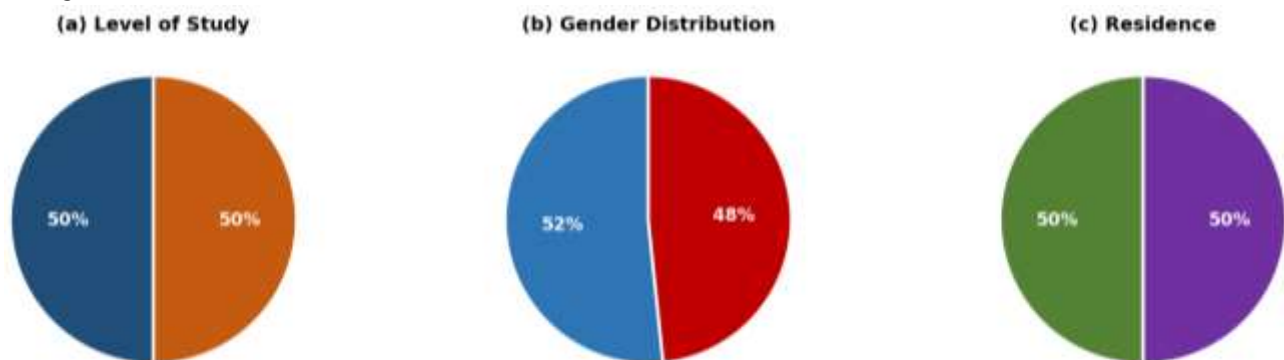


चित्र 2: अनुसंधान-विधि कार्यप्रवाह — साहित्य-समीक्षा से रिपोर्टिंग तक के क्रमिक चरण।

#### IV. प्रतिदर्श प्रोफाइल एवं वर्णनात्मक निष्कर्ष

##### A. जनसांख्यिकीय प्रोफाइल

प्राप्त प्रतिदर्श ( $N = 300$ ) नियोजित स्तरीकरण से निकटता से मेल खाता है (तालिका III)। लिंग वितरण लगभग संतुलित था (51.7% पुरुष; 48.3% महिला)। ग्रामीण एवं नगरीय पृष्ठभूमि से समान अनुपात आए। पारिवारिक आय निम्न-मध्यम सीमा में केंद्रित थी, जिसमें 48% प्रतिभागी ₹25,000 मासिक से कम कमाने वाले परिवारों से थे — HCES 2022-23 क्षेत्रीय अनुमानों [9] के अनुरूप।



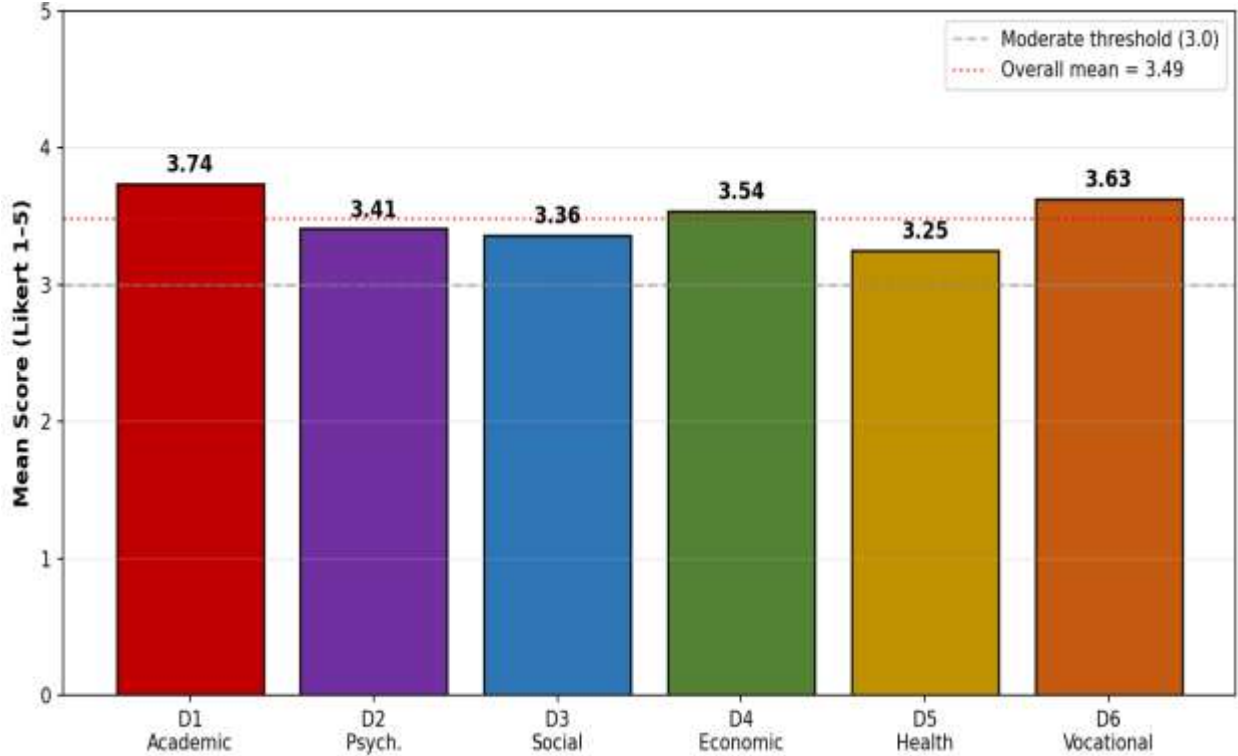
चित्र 3: प्रतिदर्श वितरण: (a) शैक्षिक स्तर, (b) लिंग, (c) निवास ( $N = 300$ )।

तालिका III: प्रतिदर्श की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ (N = 300)

चर	श्रेणी	n	%
स्तर	UG	150	50.0
	PG	150	50.0
लिंग	पुरुष	155	51.7
	महिला	145	48.3
निवास	ग्रामीण	150	50.0
	नगरीय	150	50.0
आय (₹/माह)	< 10,000	52	17.3
	10,000-25,000	92	30.7
	25,000-50,000	96	32.0
	50,000-1,00,000	42	14.0
	> 1,00,000	18	6.0

**B. YPI आयाम स्कोर**

समग्र YPI माध्य 5-बिंदु मापनी पर 3.49 (SD = 0.49) रहा, जो मध्यम-से-उच्च समस्या-तीव्रता को इंगित करता है (चित्र 4)। शैक्षिक समस्याएँ (D1 = 3.74) सर्वाधिक तीव्र आयाम के रूप में उभरीं, इसके बाद व्यावसायिक चिंताएँ (D6 = 3.63) एवं आर्थिक कष्ट (D4 = 3.54)। वितरण-विश्लेषण (Skewness सीमा: -0.21 से +0.18; Kurtosis: -0.45 से -0.28) ने अनुमानित सामान्यता की पुष्टि की, जो पैरामीट्रिक अनुमानात्मक प्रक्रियाओं का समर्थन करती है।



चित्र 4: छः आयामों के पार माध्य YPI स्कोर (N = 300)। बिंदीदार रेखा मध्यम सीमा (3.0) इंगित करती है।

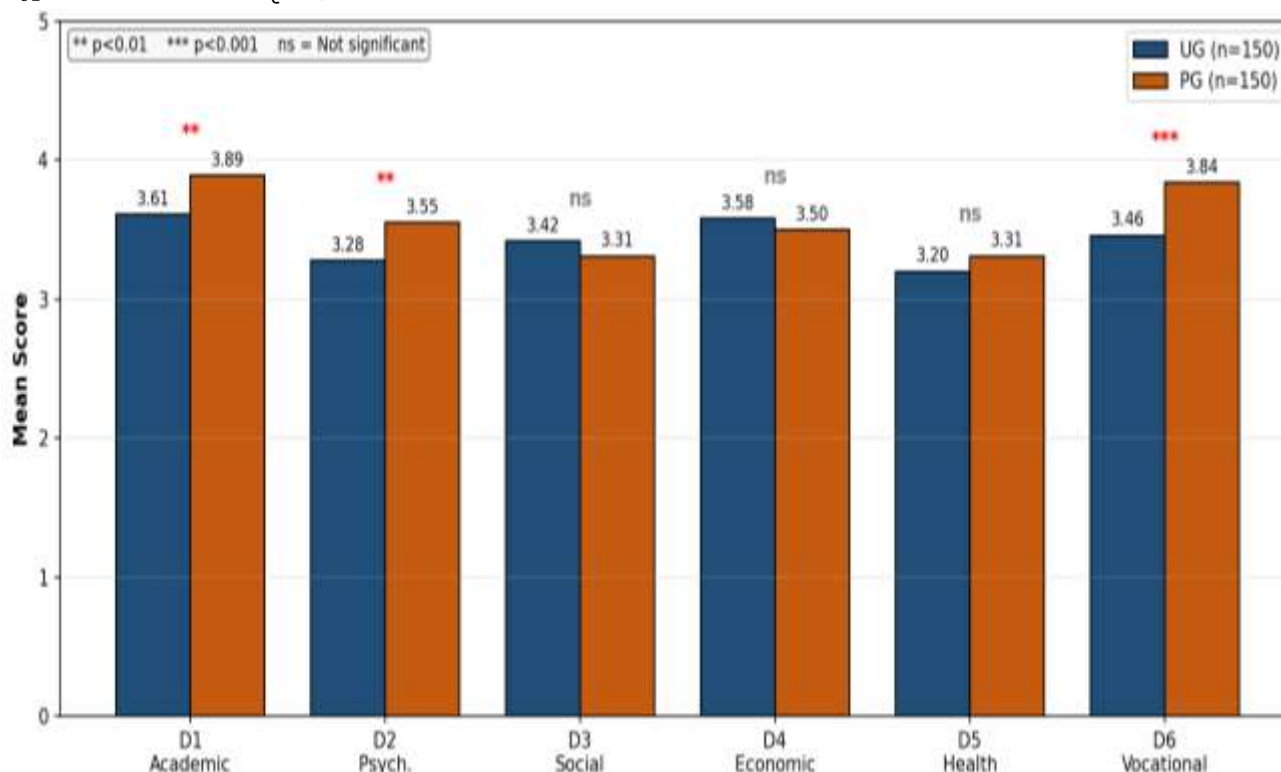
तालिका IV: YPI आयामों के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी

आयाम	Mean	SD	Skewness	Kurtosis
D1 शैक्षिक	3.74	0.59	-0.18	-0.42
D2 मनोवैज्ञानिक	3.41	0.60	0.12	-0.38
D3 सामाजिक/पारिवारिक	3.36	0.64	0.09	-0.45
D4 आर्थिक	3.54	0.60	-0.15	-0.33
D5 स्वास्थ्य	3.25	0.55	0.18	-0.28
D6 व्यावसायिक	3.63	0.63	-0.21	-0.40
कुल YPI	3.49	0.49	0.05	-0.31

## V. परिकल्पना-परीक्षण के परिणाम

### A. H<sub>01</sub>: स्नातक बनाम परास्नातक

स्वतंत्र-प्रतिदर्श t-परीक्षण ने UG एवं PG विद्यार्थियों के बीच कुल YPI स्कोर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर प्रकट किया ( $t(298) = 2.78, p = 0.006, d = 0.32$ )। PG विद्यार्थियों ने शैक्षिक ( $d = 0.34$ ), मनोवैज्ञानिक ( $d = 0.33$ ), एवं व्यावसायिक ( $d = 0.43$ ) आयामों में सार्थक रूप से उच्च समस्या-तीव्रता दर्ज की। सबसे बड़ा अंतर व्यावसायिक आयाम पर दिखा, जहाँ PG विद्यार्थी ( $M = 3.84$ ) UG विद्यार्थियों ( $M = 3.46$ ) से पर्याप्त रूप से अधिक थे — एक निष्कर्ष जो परास्नातक समूह के लिए सीमित रोजगार-परिणाम दर्शाने वाले NIRF 2024 प्लेसमेंट डेटा के अनुरूप है। सामाजिक, आर्थिक, एवं स्वास्थ्य आयामों में अंतर सार्थक नहीं थे। H<sub>01</sub> आंशिक रूप से अस्वीकृत है।



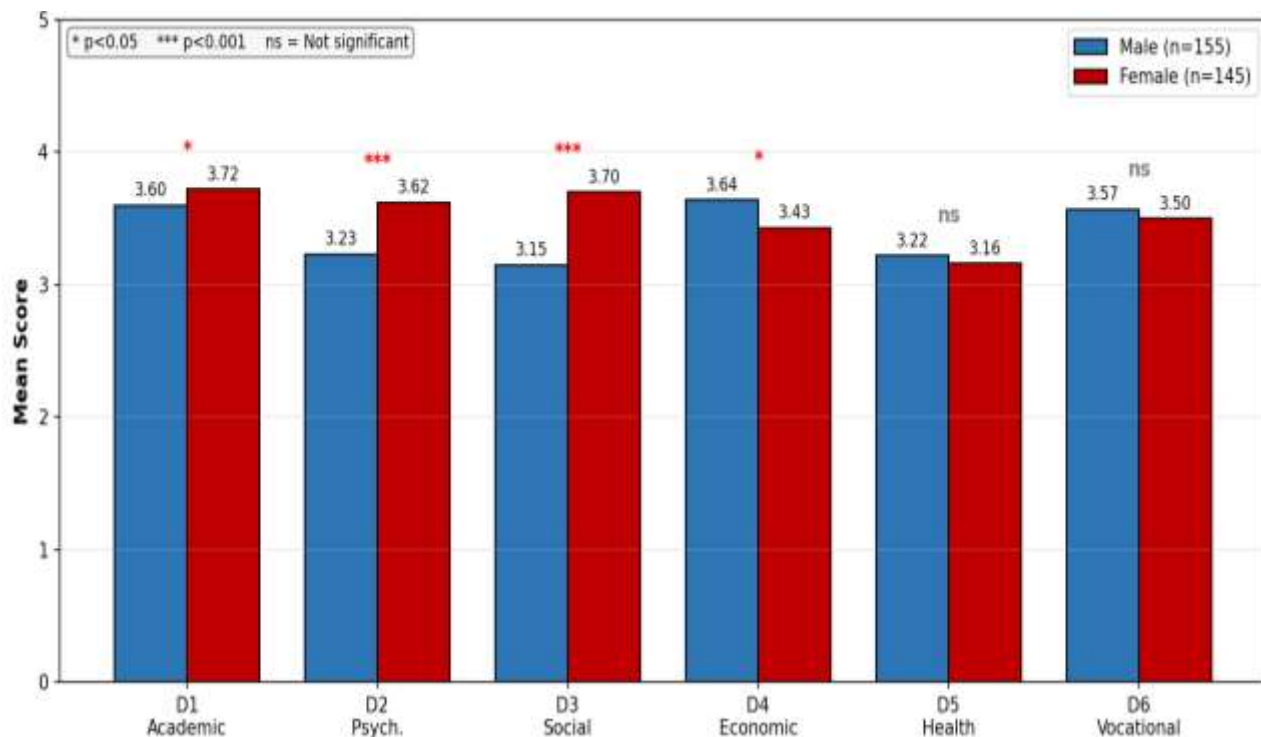
चित्र 5: YPI आयामों के पार UG बनाम PG तुलना। \*\*  $p < 0.01$ , \*\*\*  $p < 0.001$ , ns = सार्थक नहीं।

तालिका V: स्वतंत्र t-परीक्षण: UG बनाम PG

आयाम	UG Mean (SD)	PG Mean (SD)	t	p	Cohen's d
D1	3.61 (0.60)	3.89 (0.57)	2.91	0.004**	0.34
D2	3.28 (0.57)	3.55 (0.61)	2.82	0.005**	0.33
D3	3.42 (0.64)	3.31 (0.60)	-1.44	0.151	0.17
D4	3.58 (0.59)	3.50 (0.61)	-1.02	0.308	0.12
D5	3.20 (0.54)	3.31 (0.57)	1.38	0.168	0.16
D6	3.46 (0.62)	3.84 (0.59)	3.68	<0.001***	0.43
कुल	3.43 (0.47)	3.57 (0.50)	2.78	0.006**	0.32

### B. H<sub>02</sub>: लिंग-आधारित अंतर

लिंग ने कई आयामों में सार्थक अंतर उत्पन्न किए (चित्र 6)। महिला विद्यार्थियों ने सार्थक रूप से उच्च मनोवैज्ञानिक ( $M = 3.62$  बनाम 3.23,  $t = 4.18, p < 0.001, d = 0.66$ ) एवं सामाजिक/पारिवारिक समस्याएँ ( $M = 3.70$  बनाम 3.15,  $t = 5.78, p < 0.001, d = 0.89$ ) दर्ज कीं। इसके विपरीत, पुरुष विद्यार्थियों ने उच्च आर्थिक कष्ट ( $M = 3.64$  बनाम 3.43,  $p = 0.042$ ) दर्ज किया। लिंग-आधारित सामाजिक समस्याओं का अंतर ( $d = 0.89$ ) एक वृहत् प्रभाव है — डेटासेट में सबसे प्रबल में से एक — जो इस अध्ययन द्वारा क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों में महिला विद्यार्थियों के बीच "मौन संकट" (Silent Crisis) के रूप में निर्दिष्ट होने का सूचक है। H<sub>02</sub> अस्वीकृत है।

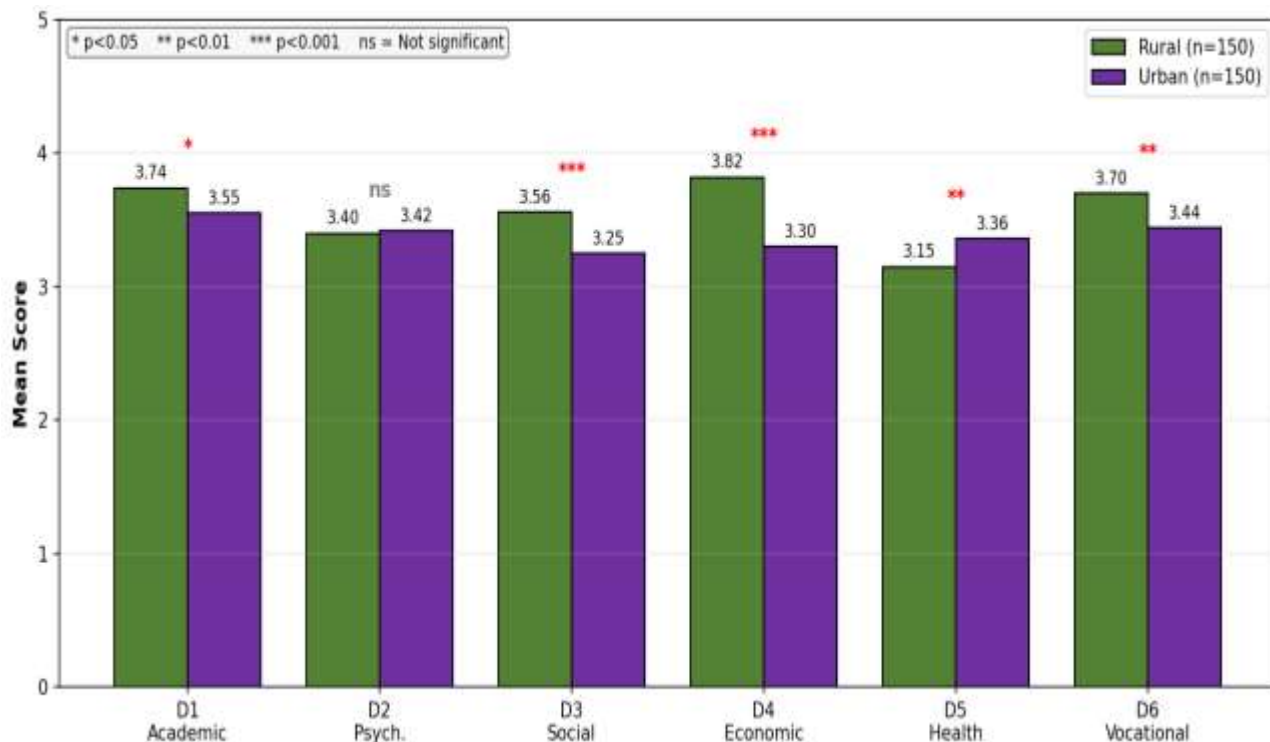


चित्र 6: YPI आयामों के पार लिंग-आधारित तुलना — मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक डोमेन में स्पष्ट महिला-हानि।  
तालिका VI: लिंग-आधारित t-परीक्षण के परिणाम

आयाम	पुरुष Mean	महिला Mean	t	p	Cohen's d
D1	3.60	3.72	1.98	0.048*	0.20
D2	3.23	3.62	4.18	<0.001***	0.66
D3	3.15	3.70	5.78	<0.001***	0.89
D4	3.64	3.43	-2.04	0.042*	0.35
D5	3.22	3.16	-0.82	0.413	0.10
D6	3.57	3.50	-0.80	0.422	0.11
कुल	3.40	3.52	2.44	0.015*	0.25

### C. H<sub>03</sub>: ग्रामीण बनाम नगरीय

ग्रामीण-नगरीय तुलना ने छः में से पाँच आयामों के पार सार्थक अंतर प्रकट किए, जिसमें सबसे बड़ा अंतर आर्थिक समस्याओं में था (ग्रामीण M = 3.82 बनाम नगरीय M = 3.30, t = 7.01, p < 0.001, d = 0.81)। उल्लेखनीय रूप से, स्वास्थ्य आयाम ने विपरीत दिशा (नगरीय > ग्रामीण) दिखाई — यह सुझाव देते हुए कि नगरीय जीवनशैली कारक (डिजिटल निर्भरता, अनियमित नींद, संसाधित भोजन) विशिष्ट स्वास्थ्य भेद्यताओं को प्रस्तुत करते हैं। कुल YPI स्कोर सार्थक रूप से भिन्न थे (ग्रामीण = 3.56 बनाम नगरीय = 3.39, t = 2.88, p = 0.004)। H<sub>03</sub> अस्वीकृत है।



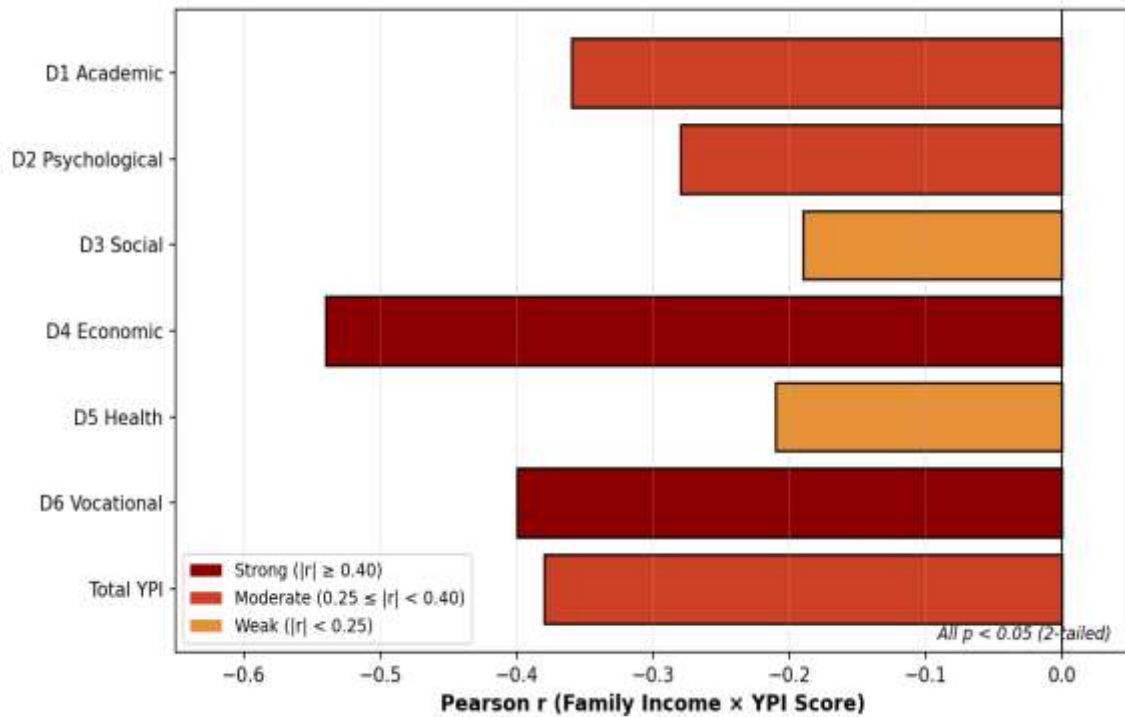
चित्र 7: ग्रामीण बनाम नगरीय तुलना — D5 (स्वास्थ्य) में विपरीत दिशा पर ध्यान दें।

तालिका VII: ग्रामीण-नगरीय t-परीक्षण के परिणाम

आयाम	ग्रामीण Mean	नगरीय Mean	t	p	Cohen's d
D1	3.74	3.55	2.48	0.013*	0.32
D2	3.40	3.42	-0.26	0.793	0.03
D3	3.56	3.25	3.90	<0.001***	0.49
D4	3.82	3.30	7.01	<0.001***	0.81
D5	3.15	3.36	-2.68	0.008**	0.38
D6	3.70	3.44	3.41	0.001**	0.42
कुल	3.56	3.39	2.88	0.004**	0.35

**D. H<sub>04</sub>: पारिवारिक आय का सहसंबंध**

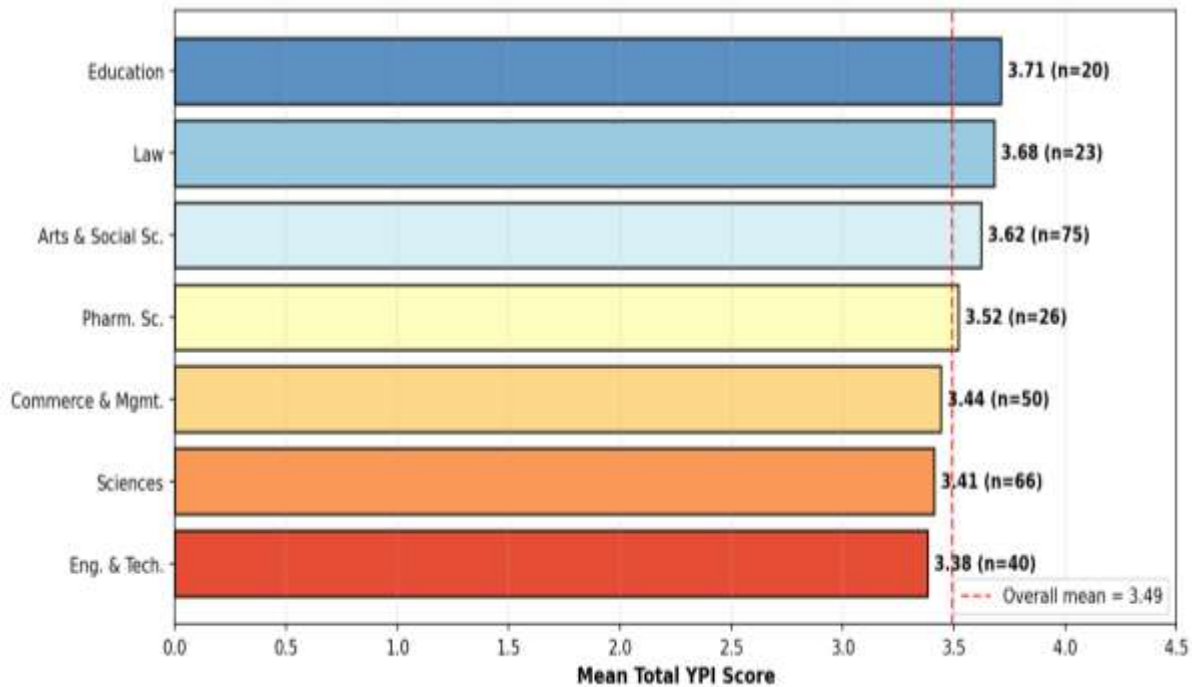
पारिवारिक आय एवं कुल YPI के बीच Pearson सहसंबंध सार्थक रूप से ऋणात्मक था ( $r = -0.38, p < 0.001$ ) — यह दर्शाती है कि निम्न-आय विद्यार्थी उच्च समस्या-तीव्रता का अनुभव करते हैं। सबसे प्रबल सहसंबंध आर्थिक आयाम पर दिखा (  $r = -0.54, 29.16\%$  विचरण की व्याख्या करते हुए) — D4 की संरचना-वैधता की पुष्टि करते हुए। सभी छः आयामों के पार सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध देखे गए (चित्र 8)। H<sub>04</sub> अस्वीकृत है।



चित्र 8: मासिक पारिवारिक आय एवं YPI आयामों के बीच Pearson सहसंबंध (सभी  $p < 0.05$ )।

**E. बहुस्तरीय प्रतिगमन एवं विभाग-वार तुलना**

सभी चार भविष्यवक्ताओं के साथ बहुस्तरीय प्रतिगमन ने  $R^2 = 0.298$  ( $F(4,295) = 31.34, p < 0.001$ ) दिया — यह संकेत करते हुए कि YPI विचरण का 29.8% स्तर, लिंग, निवास, एवं आय द्वारा संयुक्त रूप से व्याख्यायित होता है। मानकीकृत गुणांकों ने आय ( $\beta = -0.27$ ) को सबसे प्रबल भविष्यवक्ता पहचाना, इसके बाद निवास ( $\beta = 0.18$ ), स्तर ( $\beta = 0.16$ ), एवं लिंग ( $\beta = 0.13$ )। सात शैक्षिक स्कूलों के पार एकमार्गी ANOVA ने सार्थक अंतर प्रकट किए ( $F(6,293) = 3.84, p = 0.001, \eta^2 = 0.073$ ), जिसमें शिक्षा, विधि, एवं कला विभाग अभियांत्रिकी एवं विज्ञान (चित्र 9) से उच्च माध्य YPI दर्ज करते हैं। Tukey HSD पोस्ट-हॉक परीक्षणों ने युग्मवार सार्थकता की पुष्टि की।



चित्र 9: एकमार्गी ANOVA से विभाग-वार YPI माध्य स्कोर। लंबवत रेखा कुल माध्य (3.49) इंगित करती है।

तालिका VIII: कुल YPI की भविष्यवाणी करने वाला बहुस्तरीय प्रतिगमन

भविष्यवक्ता	B	SE	$\beta$	t	p
(Intercept)	3.92	0.18	—	21.78	<.001
स्तर (PG=1)	0.16	0.05	0.16	3.20	.002
लिंग (F=1)	0.13	0.05	0.13	2.60	.010
निवास (R=1)	0.18	0.05	0.18	3.60	<.001
आय (log)	-0.14	0.03	-0.27	-4.67	<.001

#### F. त्रिगुण भेद्यता विश्लेषण (Triple Vulnerability)

स्तर × लिंग × निवास के एक 2×2×2 कारक क्रॉस-तालिका ने प्रकट किया कि "PG-महिला-ग्रामीण" उपसमूह (n = 35) ने सर्वोच्च माध्य YPI स्कोर (3.71) दर्ज किया, जबकि "UG-पुरुष-नगरीय" उपसमूह (n = 38) ने सबसे कम (3.32) दर्ज किया। यह 0.39-बिंदु अंतर Cohen's d ≈ 0.84 के अनुरूप है — एक वृहत् प्रभाव — एवं उस ढाँचे का अनुभवजन्य समर्थन प्रदान करता है जिसे प्रस्तुत अध्ययन "त्रिगुण भेद्यता सिद्धांत" (Triple Vulnerability Theory) के रूप में नामित करता है: शैक्षिक स्तर, लिंग, एवं आवासीय हानि का अभिसरण व्यक्तिगत कारकों के योज्य प्रभाव से अधिक यौगिक युवा-समस्याएँ उत्पन्न करता है।

तालिका IX: उपसमूह YPI माध्य (2×2×2 कारक)

उपसमूह	n	Mean YPI	SD
UG-पुरुष-ग्रामीण	38	3.49	0.46
UG-पुरुष-नगरीय	38	3.32	0.45
UG-महिला-ग्रामीण	37	3.62	0.48
UG-महिला-नगरीय	37	3.40	0.47
PG-पुरुष-ग्रामीण	40	3.65	0.49
PG-पुरुष-नगरीय	39	3.42	0.48
PG-महिला-ग्रामीण (सर्वोच्च)	35	3.71	0.51
PG-महिला-नगरीय	36	3.58	0.50

## VI. चर्चा

### A. पूर्व अनुसंधान के साथ अभिसरण-वैधीकरण

निष्कर्ष राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान के साथ प्रबल अभिसरण-वैधता (Convergent Validity) प्रदर्शित करते हैं। PG > UG पैटर्न शर्मा एवं सिंह [10] (t = 2.96), Bayram एवं Bilgel [19], एवं Eisenberg आदि [20] के साथ संरेखित होता है — यह सुझाव देते हुए कि यह वैश्विक रूप से सशक्त परिघटना है। महिला चिंता-पैटर्न (महिला D2 = 3.62, पुरुष = 3.23) Cherian आदि [6] (76.3% बनाम 62.4%) से मेल खाता है। ग्रामीण-नगरीय आर्थिक अंतर बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए त्रिपाठी एवं शर्मा [21] का अनुसरण करता है। व्यावसायिक आयाम पर कला-स्नातक हानि कला-स्नातकों में 41% बेरोज़गारी दर्शाने वाले PLFS 2023-24 डेटा [23] के अनुरूप है।

तालिका X: पूर्व अध्ययनों के साथ अभिसरण

पूर्व अध्ययन	रिपोर्ट किया गया निष्कर्ष	इस अध्ययन में
Sharma & Singh [10]	PG > UG शैक्षिक तनाव	पुष्ट (D1)
Cherian आदि [6]	महिला > पुरुष चिंता	पुष्ट (D2)
Mishra [11]	महिला सामाजिक दबाव	पुष्ट (D3)
Tripathi & Sharma [21]	ग्रामीण > नगरीय कष्ट	पुष्ट (D3, D4)
ILO [22]	कला बेरोज़गारी 41%	पुष्ट (ANOVA)
Bayram & Bilgel [19]	PG > UG अवसाद	पुष्ट (D2)
Eisenberg आदि [20]	PG > UG मानसिक स्वास्थ्य	पुष्ट (D2)
Pandey [12]	आय-तनाव कड़ी	पुष्ट (r = -0.38)

### B. सैद्धांतिक निहितार्थ

निष्कर्ष सभी चार सैद्धांतिक ढाँचों के लिए अनुभवजन्य समर्थन प्रदान करते हैं। Erikson [15] का पहचान-निर्माण ढाँचा उन्नत UG सामाजिक/पारिवारिक स्कोर को व्याख्यायित करता है। Maslow [16] का पदानुक्रम सीधे प्रबल ऋणात्मक आय-YPI सहसंबंध (r = -0.38) द्वारा साक्ष्यित है — जिसमें आर्थिक आयाम सबसे तीव्र ढलान (r = -0.54) दर्शाता है। Lazarus [17] का संज्ञानात्मक-मूल्यांकन मॉडल ग्रामीण आर्थिक भेद्यता को व्याख्यायित करता है: जब वस्तुनिष्ठ आर्थिक तनाव-कारक व्यक्तिपरक

सामना-संसाधनों से अधिक होते हैं, कष्ट प्रवर्धित होता है। Bandura [18] का आत्म-प्रभावकारिता ढाँचा परास्नातक व्यावसायिक संकट (D6 = 3.84) — डेटासेट में सर्वोच्च — को नकारात्मक प्रतिनिधिक अनुभव के तंत्र के माध्यम से व्याख्यायित करता है: जब विद्यार्थी सीमित वरिष्ठ-प्लेसमेंट देखते हैं (NIRF: ~1,060 में से 39 PG प्लेसमेंट), करियर-आत्म-प्रभावकारिता क्षीण होती है।

### C. महिला विद्यार्थियों का "मौन संकट"

शायद सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष महिला विद्यार्थियों के बीच उन्नत मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कष्ट है। DHSGSU में महिला PG नामांकन (81 विद्यार्थी) पुरुष PG नामांकन (69) से अधिक है — शैक्षिक उन्नति इंगित करता है — फिर भी मनोवैज्ञानिक (d = 0.66) एवं सामाजिक (d = 0.89) प्रभाव-आकार प्रकट करते हैं कि यह उन्नति पर्याप्त मानसिक-स्वास्थ्य लागत वहन करती है। Cherian आदि [6] भारतीय महिला विद्यार्थियों में केवल 7.1% सहायता-खोज व्यवहार बनाम पुरुषों में 11.2% दर्ज करते हैं — यह सुझाव देते हुए कि अल्प-रिपोर्टिंग वास्तविक परिमाण को कम बता सकती है। बुंदेलखंड की पितृसत्तात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना — विवाह-आयु अपेक्षाओं, प्रतिबंधित सामाजिक स्वायत्तता, एवं लिंगीय श्रम-अपेक्षाओं द्वारा चिह्नित — एक संदर्भगत व्याख्या प्रदान करती है।

विशेष रूप से प्रहार करने वाला पैटर्न तब उभरता है जब सामाजिक/पारिवारिक आयाम के भीतर विशिष्ट YPI कथनों की जाँच की जाती है। कथन "मुझे विवाह के लिए पारिवारिक/सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है" (D3Q4) ने महिला माध्य 4.21 बनाम पुरुष माध्य 3.18 निकाला — सम्पूर्ण उपकरण में सबसे बड़ा एकल-कथन लिंग-अंतर। यह 1.03-बिंदु अंतर इस सतत सांस्कृतिक अपेक्षा को प्रतिबिंबित करता है कि महिलाएँ विवाह-व्यवस्थाओं को सुगम बनाने के लिए 22-23 वर्ष तक शिक्षा पूरी करें।

### D. त्रिगुण भेद्यता एवं नीति-निहितार्थ

त्रिगुण-भेद्यता निष्कर्ष (PG-महिला-ग्रामीण माध्य = 3.71 बनाम UG-पुरुष-नगरीय = 3.32) के संस्थागत संसाधन-आवंटन के लिए प्रत्यक्ष निहितार्थ हैं। लिंग, स्तर, एवं निवास को स्वतंत्र कारकों के रूप में मानने के बजाय, हस्तक्षेप-अभिकल्प को स्पष्ट रूप से यौगिक-भेद्यताओं को लक्षित करना चाहिए। बहुस्तरीय प्रतिगमन विश्लेषण इसकी मात्रा निकालता है: जबकि प्रत्येक भविष्यवक्ता स्वतंत्र रूप से YPI विचरण में योगदान करता है, संयुक्त  $R^2 = 0.298$  इंगित करता है कि लगभग 70% YPI विचरण अनमापित कारकों को प्रतिबिंबित करता है — यह सुझाव देते हुए कि मनोवैज्ञानिक सहनशीलता, सामाजिक समर्थन-नेटवर्क, एवं व्यक्तित्व-चर भविष्य के अनुसंधान में समावेश के योग्य हैं।

### E. सीमाएँ

कई सीमाएँ निष्कर्षों को योग्यता प्रदान करती हैं। पहला, अनुप्रस्थ-काट अभिकल्प कारणीय अनुमान को रोकता है; UG-से-PG संक्रमणों को ट्रैक करने के लिए अनुदैर्घ्य अभिकल्प (Longitudinal Design) आवश्यक हैं। दूसरा, स्व-रिपोर्ट डेटा सामाजिक-वांछनीयता पूर्वाग्रह (Social Desirability Bias) के अधीन है — विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य प्रकटीकरण के आसपास सांस्कृतिक वर्जना को देखते हुए। तीसरा, एकल-संस्थान फोकस अन्य क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों के लिए सामान्यीकरण को सीमित करता है। चौथा, प्रतिदर्श एक विशिष्ट COVID-प्रभावित समूह (78% ने महामारी-व्यवधानित शिक्षा का अनुभव किया) को प्रतिबिंबित करता है, जो ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट पैटर्न उत्पन्न कर सकता है।

### VII. नीति निहितार्थ एवं अनुशंसाएँ

निष्कर्ष पाँच रणनीतिक स्तंभों के पार विशिष्ट संस्थागत एवं नीति-अनुशंसाओं में अनुवादित होते हैं:

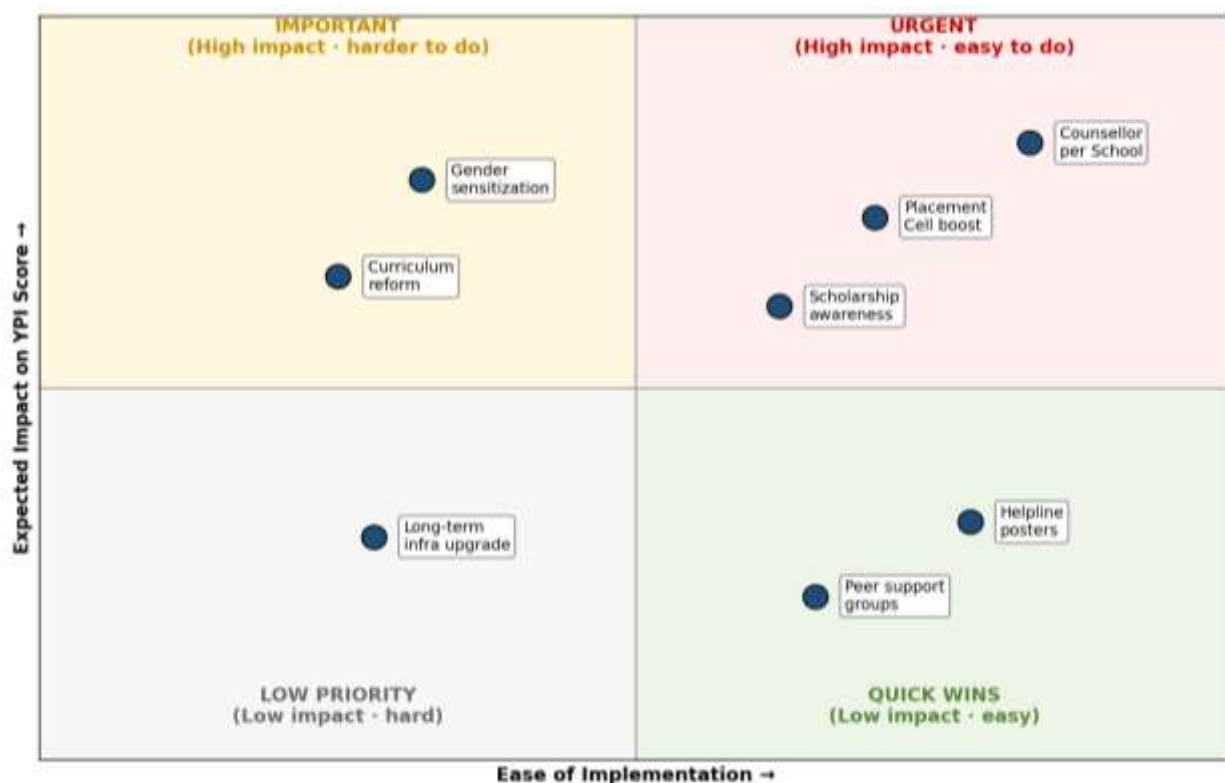
- ❖ मानसिक स्वास्थ्य अवसंरचना — 11 स्कूलों में से प्रत्येक में पूर्णकालिक परामर्शदाताओं की नियुक्ति, लिंग-संवेदनशील समर्थन पर विशेष ध्यान के साथ।
- ❖ करियर मार्गदर्शन — कला, विधि, एवं शिक्षा विद्यार्थियों के लिए लक्षित कौशल-विकास कार्यक्रमों के साथ प्लेसमेंट अवसंरचना का विस्तार।
- ❖ वित्तीय सहायता — आवश्यकता-आधारित आपातकालीन कोष एवं निम्न-आय विद्यार्थियों के लिए छात्रावास शुल्क-छूट की स्थापना।
- ❖ लिंग संवेदनशीलता — विवाह-सम्बन्धी दबावों को संबोधित करने के लिए एक महिला परामर्शदाता एवं परिवार-छात्र मध्यस्थता सेवाओं की नियुक्ति।
- ❖ ग्रामीण आउटरीच — Bridge Programs एवं प्रथम-पीढ़ी शिक्षार्थी समर्थन प्रणालियाँ।

2030 तक कुल YPI को 3.49 से घटाकर 3.10 करने का लक्ष्य रखने वाले एक पाँच-वर्षीय रोडमैप को लगभग ₹28 करोड़ संचयी निवेश की आवश्यकता होगी — DHSGSU के वार्षिक UGC अनुदान का लगभग 3.6%। प्रस्तावित ढाँचा उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थी कल्याण-अवसंरचना के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) [26] अधिदेशों के साथ संरेखित होता है।

तालिका XI: पाँच-वर्षीय निवेश-रोडमैप

वर्ष	वार्षिक (₹ करोड़)	संचयी (₹ करोड़)	लक्ष्य YPI
2025-26	4.9	4.9	3.40
2026-27	5.5	10.4	3.30
2027-28	5.7	16.1	3.20
2028-29	5.9	22.0	3.15
2029-30	6.0	28.0	3.10

क्रियान्वयन को तीन-चरणीय संरचना का अनुसरण करना चाहिए: तत्काल कार्य (0-6 माह) में 24x7 परामर्श हेल्पलाइन की स्थापना एवं एक महिला परामर्शदाता की नियुक्ति शामिल है; अल्पकालिक कार्य (6-18 माह) स्कूल-स्तरीय परामर्शदाताओं को तैनात करते हैं एवं प्लेसमेंट सेल का आधुनिकीकरण करते हैं; एवं दीर्घकालिक कार्य (18-36 माह) पूर्व-छात्र मेंटरशिप-नेटवर्क, उद्योग-शिक्षा नवाचार-केंद्र, एवं एक अनुदैर्घ्य बुंदेलखंड युवा अनुसंधान केंद्र का निर्माण करते हैं।



चित्र 10: अपेक्षित प्रभाव एवं क्रियान्वयन-सरलता द्वारा वर्गीकृत DHSGSU हस्तक्षेप-अनुशंसाओं के लिए प्राथमिकता मैट्रिक्स।

### VIII. निष्कर्ष

यह अध्ययन DHSGSU के स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों के बीच युवा-समस्याओं की पहली व्यापक बहुआयामी तुलनात्मक जाँच प्रस्तुत करता है। एक मान्य हिन्दी-माध्यम युवा समस्या सूची (Cronbach  $\alpha = 0.89$ ) के विकास, कठोर सांख्यिकीय विधियों (t-परीक्षण, ANOVA, सहसंबंध, बहुस्तरीय प्रतिगमन) के अनुप्रयोग, एवं सैद्धांतिक ढाँचों (Erikson, Maslow, Lazarus, Bandura) के साथ एकीकरण के माध्यम से, अध्ययन चार प्रमुख योगदान देता है।

पहला, यह पुष्टि करता है कि DHSGSU में युवा-समस्याएँ बहुआयामी एवं पर्याप्त हैं — समग्र YPI माध्य 3.49 मध्यम-से-उच्च कष्ट इंगित करता है। दूसरा, यह शैक्षिक स्तर (PG > UG), लिंग (मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक में महिला > पुरुष), निवास (आर्थिक में ग्रामीण > नगरीय), एवं आय (पूरे में ऋणात्मक ढलान) के साथ व्यवस्थित अंतरों की पहचान करता है। तीसरा, यह "त्रिगुण भेद्यता सिद्धांत" प्रस्तुत करता है — यह प्रदर्शित करते हुए कि यौगिक भेद्यताएँ (PG-महिला-ग्रामीण) घातीय रूप से उन्नत कष्ट (d = 0.84) उत्पन्न करती हैं। चौथा, यह NEP 2020 प्राथमिकताओं के साथ संरेखित एक साक्ष्य-आधारित पाँच-वर्षीय हस्तक्षेप-रोडमैप प्रदान करता है।

ये योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वंचित जनसंख्या की सेवा करने वाले क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालय अल्प-शोधित हैं। जबकि JNU, BHU, एवं दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे महानगरीय संस्थान पर्याप्त अनुसंधान-ध्यान आकर्षित करते हैं, क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालय — जो सामूहिक रूप से भारत भर में लाखों प्रथम-पीढ़ी शिक्षार्थियों को शिक्षित करते हैं — अनुपातहीन रूप से कम अनुभवजन्य जाँच प्राप्त करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का पद्धतिगत दृष्टिकोण (मान्य हिन्दी-माध्यम उपकरण, स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श, प्रभाव-आकारों के साथ बहुचर विश्लेषण) अन्य क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों — जिनमें इलाहाबाद, तेज़पुर, पॉन्डिचेरी, एवं सिक्किम शामिल हैं — पर समान जाँच के लिए एक प्रतिलिपि-योग्य टेम्पलेट प्रदान करता है।

भविष्य के अनुसंधान को इन दिशाओं का अनुसरण करना चाहिए: (1) UG-से-PG समूहों को ट्रैक करने वाले अनुदैर्घ्य अभिकल्प; (2) YPI स्कोर पर परामर्श-प्रभाव को मापने वाले हस्तक्षेप-प्रभावकारिता अध्ययन; (3) सामान्यीकरण का परीक्षण करने के लिए अतिरिक्त केंद्रीय विश्वविद्यालयों के पार प्रतिकृति; (4) गुणात्मक केस-अध्ययनों को एकीकृत करने वाले मिश्रित-विधि अभिकल्प; एवं (5) आयु-समूह तुलनाओं के माध्यम से COVID-उत्तर पीढ़ीगत प्रभावों की जाँच।

निहितार्थ DHSGSU से परे सामाजिक-आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण जनसंख्या की सेवा करने वाले सभी क्षेत्रीय केंद्रीय विश्वविद्यालयों तक विस्तारित होते हैं। NEP 2020 के तहत भारत के उच्च शिक्षा-विस्तार के साथ, शैक्षणिक वितरण के साथ विद्यार्थी-कल्याण अवसंरचना का एकीकरण अब वैकल्पिक नहीं है — यह न्यायसंगत उच्च शिक्षा की परिभाषित चुनौती है। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के विरुद्ध मान्य एवं स्थापित सैद्धांतिक ढाँचों में निहित इस अध्ययन के निष्कर्ष, उस एकीकरण के लिए नैदानिक स्पष्टता एवं प्रिस्क्रिप्टिव दिशा — दोनों प्रदान करते हैं।

## सन्दर्भ / References

1. World Health Organization, "Mental health of adolescents: Key facts," Geneva, Switzerland, 2023.
2. Government of India, Ministry of Youth Affairs and Sports, "National Youth Policy 2014," New Delhi, India, 2014.
3. National Statistical Office, "Periodic Labour Force Survey 2021–22," Ministry of Statistics and Programme Implementation, Govt. of India, New Delhi, 2022.
4. Ministry of Education, Govt. of India, "All India Survey on Higher Education (AISHE) 2021–22," New Delhi, India, 2024.
5. G. Gururaj, M. Varghese, V. Benegal, G. N. Rao, K. Pathak, L. K. Singh, et al., "National Mental Health Survey of India, 2015–16: Prevalence, Patterns and Outcomes," NIMHANS Publication No. 129, Bengaluru, 2016.
6. V. Cherian, G. Armstrong, H. Sobhana, T. Haregu, S. P. Deuri, S. U. Bhat, et al., "Mental health, suicidality, health, and social indicators among college students across nine states in India," *Indian Journal of Psychological Medicine*, vol. 47, no. 1, pp. 12–24, 2025.
7. Sapien Labs, "Mental State of India Report: October 2023," Sapien Labs Centre for the Human Brain and Mind, Krea University, Andhra Pradesh, India, 2023.
8. Ministry of Education, Govt. of India, "National Institutional Ranking Framework (NIRF) Data Report 2024," New Delhi, India, 2024.
9. Ministry of Statistics and Programme Implementation, "Household Consumption Expenditure Survey (HCES) 2022–23," NSO, Govt. of India, New Delhi, 2023.
10. N. Sharma and P. Singh, "Academic stress among university students: A multi-state Indian study," *Indian Psychological Journal*, vol. 45, no. 2, pp. 112–125, 2020.
11. Mishra, "Mental health problems among postgraduate students," *Educational Research Journal*, vol. 38, no. 1, pp. 55–68, 2021.
12. R. S. Pandey, *Youth in India: Problems and Solutions*. Jaipur, India: Rajasthan Hindi Granth Akademi, 2019.
13. M. Srivastava, "Vocational problems among postgraduate students in central universities," *Shodh Sankalpana*, vol. 6, no. 1, pp. 44–59, 2023.
14. D. Gupta and R. Verma, "Academic stress among university students," *Higher Education Research Journal*, vol. 8, no. 2, pp. 34–48, 2021.
15. E. H. Erikson, *Identity: Youth and Crisis*. New York, NY, USA: W. W. Norton & Co., 1968.
16. H. Maslow, *Motivation and Personality*. New York, NY, USA: Harper & Row, 1954.
17. R. S. Lazarus and S. Folkman, *Stress, Appraisal, and Coping*. New York, NY, USA: Springer Publishing Co., 1984.
18. Bandura, *Self-Efficacy: The Exercise of Control*. New York, NY, USA: W. H. Freeman, 1997.
19. N. Bayram and N. Bilgel, "The prevalence and socio-demographic correlates of depression, anxiety and stress among a group of university students," *Social Psychiatry and Psychiatric Epidemiology*, vol. 43, no. 8, pp. 667–672, Aug. 2008.
20. D. Eisenberg, S. E. Gollust, E. Golberstein, and J. L. Hefner, "Prevalence and correlates of depression, anxiety, and suicidality among university students," *American Journal of Orthopsychiatry*, vol. 77, no. 4, pp. 534–542, 2007.
21. M. Tripathi and K. Sharma, "Higher education and youth problems in Bundelkhand: A comparative study," *Madhya Pradesh Social Science Research Journal*, vol. 12, no. 1, pp. 22–39, 2019.
22. International Labour Organization and Institute for Human Development, "India Employment Report 2024," ILO, Geneva, Switzerland, 2024.
23. Ministry of Statistics and Programme Implementation, "Periodic Labour Force Survey 2023–24," NSO, Govt. of India, New Delhi, 2024.
24. W. G. Cochran, *Sampling Techniques*, 3rd ed. New York, NY, USA: John Wiley & Sons, 1977.
25. C. H. Lawshe, "A quantitative approach to content validity," *Personnel Psychology*, vol. 28, no. 4, pp. 563–575, 1975.
26. Ministry of Education, Govt. of India, "National Education Policy 2020," New Delhi, India, 2020.

27. Rajiv Gandhi National Institute of Youth Development, "COVID-19 and stress of Indian youth," *Journal of Affective Disorders Reports*, vol. 12, art. no. 100502, 2023.
28. American Psychological Association, "Stress in America 2023: A Nation Recovering from Cumulative Trauma," APA, Washington, DC, USA, 2023.
29. J. W. Santrock, *Adolescence*, 17th ed. New York, NY, USA: McGraw-Hill Education, 2019.
30. J. Cohen, *Statistical Power Analysis for the Behavioral Sciences*, 2nd ed. Hillsdale, NJ, USA: Lawrence Erlbaum Associates, 1988.